चारुदत्तम् तृतीयोऽङ्कः

1). उत्कण्ठितस्य हृदयानुगता सखीव
सङ्कीर्णदोषरहिता विषयेषु गोष्ठी।
क्रीडारसेषु मदनव्यसनेषु कान्ता
स्त्रीणां तु कान्तरतिविघ्नकरी सपत्नी॥

उत्कण्ठित जन के लिए मनोनुकूल सखी की भाँति, भोग्य विषय में गोष्ठी की तरह संकीर्ण दोषरहित, काम की रसीली क्रीडाओं में कान्ता की भाँति, और पति के प्रति स्त्रियों के प्रेम में विघ्न डालने वाली ~~सप~~ सपत्नी के समान है।

2) रक्तं च तारमधुरं च समं स्फुटं च
भावार्पितं च न च साभिनयप्रयोगम्।
किं वा प्रशस्य विविधैर्बहु तत्तदुक्त्वा
भित्यन्तरं यदि भवेत् युवतीति विद्याम्॥

रागयुक्त, उच्च एवं मधुर, वैषम्यरहित, परिस्फुट, भावपूर्ण तथा अभिनय प्रयोग से युक्त (गान किया है)। उपर्युक्त स्वरों को नाना प्रकार से कहकहकर कहाँ तक प्रशंसा ~~करूँ~~ की जाए। ऐसा मालूम पड़ता है मानो दीवार की ओट से कोई युवती ही गा रही हो।

3) असौ हि दत्त्वा तिमिरावकाशमस्तं गतो ह्यष्टमपक्षचन्द्रः।
तोयावगाढस्य वनद्विपस्य विषाणकोटीव निमज्जमाना॥

जल में डूबे हुए जंगली हाथी के मग्नप्राय दाँतों के अग्र भाग की तरह यह शुक्ल पक्ष की अष्टमी का चन्द्रमा अंधकार के लिए फैलने का स्थान देकर अस्त हो रहा है।

5) कामं नीचमिदं वदन्तु विबुधाः सुप्तेषु यद्वर्तते
विश्वस्तेषु हि वञ्चनापरिभवः शौर्यं न कार्कश्यता।
स्वाधीना वचनीयतापि तु वरं बद्धो न सेवाञ्जलिः
मार्गश्चैष नरेन्द्रसौप्तिकवधे पूर्वं कृतो द्रौणिना॥

लोगों के सो जाने पर जो चौर्यादि कर्म किया जाता है, उसे पण्डित लोग निकृष्ट कर्म कहते हैं क्योंकि विश्वस्त जन का छल द्वारा जो अपमान किया जाता है वह वीर कार्य नहीं, अपितु क्रूरकर्म ही कहा ~~जाता~~ जाता है। तथापि निन्दनीय तथा स्वाधीन चौर्यादि वृत्ति, ~~सेवा के निमित्त हाथ जोड़ने की अपेक्षा~~ पराधीन सेवावृत्ति से उचित है। बहुत प्राचीन काल में यह मार्ग सोते हुए द्रौपदी के पाँच पुत्रों के वध में अश्वत्थामा द्वारा अपनाया गया था।

8) देशः को नु जलावसेकशिथिलश्छेदाद्यशब्दो भवेत्
भित्तीनां क्व नु दर्शितान्तरसुखः सन्धिः कराले भवेत् ।
क्षारक्षीणतया चलेष्टककृशं हर्म्यं क्व जीर्णं भवेत्
कुत्र स्त्रीजनदर्शनं च न भवेत् स्वन्तस्य यत्नो भवेत् ॥

यहाँ दीवार का कौन स्थान वर्षा आदि जल से नरम हो गया है जिससे छेदने समय शब्द न हो सके, अथवा कहाँ पर छेद (सुरंग विशाल होगा जिसके द्वारा भीतर की सारी चीजें सरलता से दिखा पड़ें; भवन की किस स्थान पर भित्ति जीर्ण एवं क्षार लगने के कारण नष्ट होकर शिथिल पड़ गई है, कहाँ पर स्त्रियाँ देख न सकेंगी। और इसी बीच मेरा यत्न भी सफल हो जाए।

सिंहाक्रान्त पूर्णचन्द्रं झषास्यं
चन्द्रार्धं वा व्याघ्रवक्त्रं त्रिकोणम् ।
सन्धिच्छेदः पीठिका वा गजास्य-
मस्मत्पक्ष्या विस्मिनास्ते कर्यं स्युः ॥

सिंह की उछाल के समान वक्रगति की वा पूर्णचन्द्राकार जैसी, मकर के मुख की तरह की, अथवा अर्धचन्द्राकार सरीखा, व्याघ्र के मुख की भाँति अथवा तिकोनी, चौकोनी (पीठिका) या गज के मुख की आकृति वाली सुरंग हो जिससे चौरकार्य में दक्ष लोग भी (मेरे सुरंग निर्माण की कला से) आश्चर्यित हो जाएँ।